ISSN: 0973-0583

गाँधी का सत्याग्रह आन्दोलनः एक ऐतिहासिक अध्ययन

आशुतोष कुमार
दहिवर, बक्सर, बिहार

शोध सार

गाँधी का सत्याग्रह-दर्शन सत्य के सर्वोच्च आदर्श पर आधारित हैं । यदि सत्य ही चरम शक्ति है तो उसके पुजारी का पुनीत कर्तव्य है कि सत्य की कसौटी पर खरा उतरे तथा उसके आधारों का पोषण करें। ईश्वर ही सर्वशक्तिमान तथा सर्वत्र विराजमान है। अतः ईश्वर-भक्ति के लिए आवश्यक है कि भक्त पूर्णतः विनम्र और स्वार्थरहित रहे। उसमें नैतिक तथा अध्यात्मिक मूल्यों के लिए संघर्ष करने का अजेय संकल्प तथा साहस होना चाहिए तभी वह अपनी सच्ची नैतिक भावना का प्रमाण दे सकता है। गाँधी जी कहना था कि सत्याग्रही में सत्य का आग्रह, सत्य का बल होना चाहिए, अर्थात उसे केवल सत्य पर ही निर्भर रहना चाहिए। सत्याग्रह कोई गाजर की पीपनी नहीं है कि वह बजेगी तो बजाएँगे और नहीं तो खा जाएँगे। ऐसा मानने वाला व्यक्ति भटक-भटक कर परेशान ही होता रहेगा। यह बात बिल्कुल बेकार है कि सत्याग्रह की बड़ाई वहीं व्यक्ति करता है जिसमें शरीर बल की कमी हो अथवा जो यह मानता हो कि शरीर-बल काम नहीं देता, इसलिए मजबूरन सत्याग्रही बनना पड़ता है जिनकी ऐसी मान्यता है वे सत्याग्रह बनना पड़ता है जिनकी ऐसी मान्यता है वे सत्याग्रह की लड़ाई को नहीं जानते, ऐसा कहा जा सकता है। सत्याग्रह शारीरिक बल से अधिक तेजस्वी है और उसके सामने शरीर बल तिनके के सामान है। शारीरिक बल में मुख्य बात यह है कि शक्तिशाली पुरूष अपने शरीर की परवाह न करके संग्राम में जूझता है,गाँधी के सत्याग्रह का सृजन अफ्रीका की रंगभेद की नीति के असाधारण परिप्रेक्ष्य में हुआ तथा उसका पोषण भारत में विदेशी ब्रिटिश शासन तथा देशी रियासतों के सामंतवादी शासन की असाधारण परिस्थितियों में हुआ। इस प्रकार भय तथा प्रलोभन से प्रभावित हुए बिना स्वयं कष्ट सहन करते हुए केवल अहिंसात्मक उपायों की सहायता से सदैव सत्य पर दृढ़ रहना और मन वचन तथा कर्म से उसी के अनुसार आचरण करना सत्याग्रह है।

शब्द कुँजीः अहिंसात्मक, सत्याग्रह,आत्मानुभूति,सुख शांति,आत्म-शक्ति

भूमिकाः

महात्मा गाँधी ने जीवन जीने का मार्ग बतलाया, जीने का एक दृष्टिकोण दिया है। गाँधी के इस जीवन को ही गाँधीवाद की संज्ञा दी जाती हैं। 'गाँधी जी ने स्वयं कहा था 'गाँधी मर सकता है, परन्तु गाँधीवाद सदा जीवित रहेगा।' गाँधी जी का जीवन दर्शन नया दर्शन नहीं है वरन् नया मार्ग अवश्य है। रस्किन की पुस्तक ' अनटू द लास्ट' से गाँधी जी ने शारीरिक श्रम की शिक्षा ली तथा टॉलस्टाय की पुस्तक ' ईश्वर का साम्राज्य अपने भीतर है' को पढ़कर गाँधी जी आस्तिक बने। इन्होंने कानून की शिक्षा के साथ-साथ **बाइबिल** और **लाइट ऑफ एशिया** का अध्ययन कर डाला। महात्मा गाँधी का शैक्षिक दर्शन उनके जीवन-दर्शन पर आधारित है। उनके जीवन-दर्शन के आधार सत्य एवं अहिंसा थे। उनका ईश्वर में पूर्ण विश्वास था, जिसको उन्होंने सत्य का ही दूसरा रूप माना है। गाँधी सत्य को सर्वाधिक महत्व देते थे और इसी कारण वे सत्य को ईश्वर की संज्ञा देते थे। उनके मन में सत्य के प्रति निष्ठा बाल्यावास्था से ही थी और आजीवन बनी रही। उनका सत्याग्रह का सूचना दर्शन इसी दृढ़ सत्य निष्ठा का परिणाम था। 'सत्याग्रह' शब्द 'सत्य' तथा 'आग्रह' शब्दों की संधि से बना है, जिसका अर्थ है सत्य के लिए दृढ़तापूर्वक आग्रह करना। गाँधी ने सत्याग्रह को इसी व्यापक रूप में स्वीकार किया और इसी व्यापक अर्थ में वे पर्याप्त समय तक दक्षिण अफ्रीका तथा भारत में सत्याग्रह का प्रयोग करते रहे।यदि कोई व्यक्ति स्वार्थरहित होकर निष्पक्ष रूप से विचार करने के पश्चात् किसी विचार या सिद्धान्त को सत्य मानता है तो कष्टों तथा कठिनाईयों की चिंता किए बिना उसे इसी सिद्धांत अथवा

विचार के अनुरूप दृढ़तापूर्वक आचरण करना चाहिए और इसमें बाधा डालने वाले व्यक्तियों तथा संगठनों का अहिंसात्मक उपायों द्वारा सक्रिय रूप से प्रतिरोध करना चाहिए। सामाजिक और राजनीति क्षेत्र में अन्याय तथा अत्याचार के विरूद्ध सत्याग्रह करने की प्रेरणा गाँधी को संभवत: हेनरी डेविड थोरों के 'सिविल डिसओबिडिएंस' नामक निबंध से प्राप्त हुई थी। बाद में, उन्होंने अपने व्यापक अनुभव तथा अपनी दार्शनिक मान्यताओं के आधार पर सत्याग्रह के सिद्धान्त को अधिक विकसित एवं परिष्कृत किया और इसे अपने जीवन-दर्शन का अभिन्न अंग बना लिया। हेनरी डेविड थोरे के सिविल डिसओबिडिएंस का प्रभाव गाँधी पर इतना अधिक पड़ा कि गाँधी पश्चिम के इस दार्शनिक विचार से इतना अधिक प्रभावित हुए कि आजीवन अपने जीवन में उतार लिए। इस प्रकार गाँधीजी बालक के चारों पक्षों में शरीर, हृदय, दिमाग एवं आत्मा का संतुलित विकास करने वाली शिक्षा को ही वास्तविक शिक्षा मानते थे। गाँधीजी कहते थे कि, 'सच्ची शिक्षा वही है जो बालक की बौद्धिक एवं शारीरिक क्षमताओं को जागृत कर, उनका सर्वांगीण विकास कर सके।'

गाँधी के अनुसार सत्याग्रह मनुष्य का जन्मसिद्ध अधिकार है। वह पवित्र अधिकार ही नहीं अपितु पुनीत कर्तव्य भी है। यदि सरकार जनता का प्रतिनिधित्व नहीं करती और बेईमानी और आतंकवाद का समर्थन करती है तो उसकी अवज्ञा करना आवश्यक हो जाता है । किन्तु जो अपने अधिकारों की रक्षा करना चाहते हैं, उसे हर प्रकार के कष्ट सहने के लिए तैयार रहना चाहिए।

सब प्रकार के अन्याय उत्पीड़न और शोषण के विरूद्ध शुद्धतम आत्मबल का प्रयोग ही सत्याग्रह है। कष्ट सहन कर तथा आत्मबल विश्वास के गुण है 'तेजस्वी दीन' के सक्रिय अहिंसात्मक प्रतिरोध का हृदय पर तत्काल प्रभाव होता है। वह विरोधी को जोखिम में नहीं डालना चाहता, बल्कि वह उसे अपनी निर्दोषिता की प्रचंड शक्ति से अभिभूत कर देना चाहता है। सत्याग्रह अथवा हृदय परिवर्तन के विस्मयकारी तरीकों का प्रयोग सरकार तथा सामाजिक अत्याचारियों एवं परंपरावादी नेताओं, सभी के विरूद्ध किया जा सकता है।

गाँधी ने जिस सत्याग्रह की कल्पना की, वह सामाजिक तथा राजनीतिक विघटन का सूत्र नहीं था। सत्याग्रही वही हो सकता है जिसने स्वेच्छा से बुद्धिमानी के साथ और स्वत: राज्य के कानूनों का पालन किया हो। जब मनुष्य समाज के कानूनों का ईमानदारी से पालन कर लेता है तभी वह यह निर्णय करने की स्थिति में हो सकता है कि कौन सा कानून अच्छा तथा न्यायोचित है और कौन सा अन्यायपूर्ण तथा अनुचित। तभी उसे कुछ कानूनों की सुनिश्चित परिस्थितियों में सविनय अवज्ञा करने का अधिकार प्राप्त हो सकता है। गाँधी अपने आपकों सामान्यत: कानूनों का पालन करने वाला मानते थे। जब मनुष्य राज्य के नागरिक तथा नैतिक कानूनों का पालन करके अनुशासन सीख ले तभी उसमें सविनय प्रतिरोध की क्षमता उत्पन्न हो सकती है। सरकार के कानूनों का प्रतिरोध करते समय सत्याग्रही को इस बात का ध्यान रखना चाहिए कि कहीं उसके द्वारा जाने-अनजाने, सामाजिक अथवा राजनीतिक व्यवस्था छिन्न-भिन्न न होने पाए।

प्रताप सिंह के अनुसार प्रचलित भाषा में सत्याग्रह का अर्थ अहिंसात्मक प्रतिरोध से लिया जा सकता है। लेकिन सत्याग्रह केवल अहिंसक प्रतिरोध के विभिन्न रूपों- असहयोग सविनय अवज्ञा, उपवास, धरना आदि तक ही सीमित नहीं है, सत्याग्रह अहिंसात्मक प्रतिरोध से कहीं अधिक व्यापक है। इसका शब्दिक अर्थ है किसी बात को सत्य (जिसमें अहिंसा भी सम्मिलित है) मानकर उसके लिए आग्रह करना अथवा सत्य और अहिंसा से उत्पन्न होने वाला बल।

गोपीनाथ धवन ने सर्वोदय तत्वदर्शन में लिखा है कि गाँधी के अनुसार सत्याग्रह आत्म-शक्ति अथवा प्रेम-शक्ति का पर्यायवाची है। धवन ने आगे लिखा है कि सत्याग्रह सत्य के लिए तपस्या है और इस व्यापक अर्थ में इसके अंतर्गत सब विधायी सुधारों तथा संवैधानिक सेवा के कार्यो का समावेश हो जाता है। इस अर्थ में सत्याग्रह संवैधानिक सेवा के कार्यो का समावेश हो जाता हें इस अर्थ में सत्याग्रह संवैधानिक पद्धतियों का भी निराकरण नहीं करता। वास्तव में, गाँधी की दृष्टि में अहिंसक प्रतिरोध नागरिक का संवैधानिक अधिकार है।

गाँधी मानते थे कि सत्याग्रह ही एकमात्र अस्त्र है जिसके द्वारा बुराई और अन्याय का प्रतिरोध संभव है। यह एक साफ सुथरा, अहानिकारक तथा अत्यधिक प्रभावशाली अस्त्र हैं। यह न केवल अन्याय और बुराई के प्रतिकार का

अस्त्र है बल्कि एक जीवन पद्धति भी है। जीवन की अनेकता में जो एकता होती है सत्याग्रह उसमें सम्पूर्ण आस्था रखता है। सामाजिक जीवन में भी सत्याग्रह की वही महत्वपूर्ण भूमिका हैं जो व्यक्तिगत जीवन में है। सामाजिक कुरीतियों के निराकरण में सत्याग्रह सर्वाधिक प्रभावशाली अस्त्र है।

इंडियन ओपीनियन में गाँधी ने सत्याग्रह का अर्थ स्पष्ट करते हुए लिखा था ''जिसे हम सत्य समझते हैं उसे मरण पर्यंत न छोड़ना, सत्य के लिए चाहे जितनी तकलिफें उठानी पड़े सब उठाना।'' कष्ट किसी को नहीं पहुँचाना चाहिए। क्योंकि कष्ट पहुँचाने से सत्य का उल्लंघन होता है। इतना सब सहने की शक्ति आ जाना ही सच्ची जीत है। एक अन्य संदर्भ में गाँधी ने कहा : ''सत्याग्रह एक ऐसी तलवार है जिसके सब ओर धार है। उसे काम में लाने वाला और जिसे पर वह काम में लाई जाती है, दोनों सुखी होते हैं। खून न बहाकर भी वह बड़ी कारगर होती है। उस पर न कभी जंग लगता है और न ही उसे कोई चुरा सकता है।

सत्याग्रह एक आध्यात्मिक तरीका है जिसमें अपने अत्याचारियों के विरूद्ध कोई द्वेष भाव न रखते हुए अपनी विरूद्ध कोई द्वेष भाव न रखते हुए अपनी अंतरात्मा की आवाज का अनुसरण किया जाता है और किसी भी परिस्थिति में सत्य के प्रतिपादन के पीछे नहीं हटा जाता । यदि सत्याग्रही की संघर्ष में मृत्यु भी हो जाय तो भी उसका अंत नहीं होता, बल्कि विरोधी को सत्य के दर्शन कराने के लिए कभी-कभी सत्याग्रही का मरना आवश्यक हो जाता है। गाँधी का कहना था कि सत्याग्रही विचार और व्यवहार के विभेद से बचते हुए आत्मानुशासन से बँधा रहता है। जनता-जनार्दन की सेवा का आजीवन व्रत लेना सत्याग्रही का श्रेष्ठ संकल्प है। सत्याग्रह का उद्देश्य है विरोध का अंत करना, न कि विरोधी का। इस आदर्श की पूर्ति तभी संभव है जब व्यक्ति पूर्ण अहिंसा के मार्ग पर चले। यदि व्यक्तिगत जीवन में वह सत्याग्रहवादी अहिंसावादी नहीं है तो सार्वजनिक विषयों में वह अहिंसावादी नहीं बन सकता । सत्याग्रह के सार्वजनिक प्रयोग से पहले आवश्यक है कि व्यक्ति अपने हृदय को टटोलकर देख ले, उस पर विजय प्राप्त कर लें। आन्तरिक चरित्र के अभाव में सत्याग्रही प्रभावहीन ही रहेगा। के0 एल0 श्रीधरानी ने गाँधी ने सत्याग्रह को हिंसा विहीन युद्ध का नाम दिया है।

इंडियन ओपिनियन में गाँधी ने लिखा था कि सत्याग्रह की विधि से लड़ने वालों के मार्ग को बाहरी किरणों से बिल्कुल अड़चन नहीं आ सकती । उनके लिए तो केवल उनकी अपनी कमजोरी ही बाधक होती है। दूसरी ओर साधारण लड़ाई में जो पक्ष हारता है उसके सभी लोग हारे हुए माने जाते हैं और वे हारते भी है। सत्याग्रह में एक की जीत से दूसरे की हार नहीं होती।

गाँधीजी का कहना था कि सत्याग्रही में सत्य का आग्रह, सत्य का बल होना चाहिए, अर्थात उसे केवल सत्य पर ही निर्भर रहना चाहिए। सत्याग्रह कोई गाजर की पीपनी नहीं है कि वह बजेगी तो बजाएँगे और नहीं तो खा जाएँगे। ऐसा मानने वाला व्यक्ति भटक-भटक कर परेशान ही होता रहेगा। यह बात बिल्कुल बेकार है कि सत्याग्रह की बड़ाई वहीं व्यक्ति करता है जिसमें शरीर बल की कमी हो अथवा जो यह मानता हो कि शरीर-बल काम नहीं देता, इसलिए मजबूरन सत्याग्रही बनना पड़ता है जिनकी ऐसी मान्यता है वे सत्याग्रह बनना पड़ता है जिनकी ऐसी मान्यता है उसे सत्याग्रह की लड़ाई को नहीं जानते, ऐसा कहा जा सकता है। सत्याग्रह शारीरिक बल से अधिक तेजस्वी है और उसके सामने शरीर बल तिनके के सामान है। शारीरिक बल में मुख्य बात यह है कि शक्तिशाली पुरूष अपने शरीर की परवाह न करके संग्राम में जूझता है, अर्थात वह डरपोक नहीं होता। सत्याग्रही तो अपने शरीर को कुछ भी नहीं गिनतां वह डर तो सकता ही नहीं। इसलिए न तो वह बाहरी हथियार का सहारा लेता है और न ही मौत से डरता है।

महात्मा गाँधी का दार्शनिक चिन्तनः

गाँधीजी को अपने परिवार में वैष्णव धर्म की शिक्षा मिली थी। अपने बचपन में ही इन्होंने मनुस्मृति का एक अनुवाद पढ़ डाला था। गीता तो वे नित्य पढ़ते थे। इंग्लैण्ड में इन्होंने **बाईबिल** और **लाइट ऑफ एशिया** पढ़ी थी और श्रीमती एनी बेसेन्ट का सत्संग किया था। इन सबके आधार पर इनके धार्मिक एवं दार्शनिक विचार बने। पर मूल रूप में इनका जीवन-दर्शन गीता पर आधारित है। गाँधीजी ने किसी नये दर्शन का निर्माण नहीं किया। इन्होंने भारतीय दर्शन की मूलभूत बातों को ही व्यावहारिक रूप दिया है। पर यह व्यावहारिक रूप इनकी अपनी सूझ-बूझ

का परिचायक है, इसलिए उसे आज गाँधी-दर्शन, गाँधीवाद अथवा सर्वोदय दर्शन के नाम से पुकारा जाता है।

महात्मा गाँधी के सर्वोदय दर्शनः

गाँधीजी गीता को तत्त्व ज्ञान का सर्वोत्तम ग्रंथ मानते थे। गीता के अनुसार मूल तत्त्व दो हैं- पुरुष (ईश्वर) और प्रकृति (पदार्थ), और इनमें ईश्वर श्रेष्ठ है। गाँधीजी गीता की इस बात को मानते थे। इन्होंने स्पष्ट किया कि ईश्वर की श्रेष्ठता दो बातों से स्पष्ट होती है। पहली यह कि यह प्रकृति के कण-कण में व्याप्त है परन्तु प्रकृति ईश्वर में व्याप्त नहीं है। दूसरी यह कि ईश्वर इस जगत का निर्माणकर्त्ता और पालनकर्त्ता है और वही इसका संहारकर्त्ता है। गाँधीजी ने गीता के इस तथ्य को उजागर किया कि ईश्वर इस जगत का कर्त्ता है और प्रकृति इसकी उपादान कारण है। ईश्वर को ये सत्य के रूप में मानते थे। सत्य शब्द सत् से बना है और सत् का अर्थ होता है- अस्तित्व, इसलिए सत्य का अर्थ हुआ जिसका- अस्तित्व है, जो नित्य है। गाँधीजी का विश्वास था कि ईश्वर अपरिवर्तनशील है, नित्य है इसलिए सत्य है और प्रकृति परिवर्तनशील है, अनित्य है, इसलिए असत्य है। आत्मा को ये परमात्मा का अंश मानते थे। इनका विश्वास था कि जब परमात्मा नित्य एवं सत्य है तो आत्मा भी नित्य एवं सत्य है। गाँधीजी आत्मा, परमात्मा और सत्य, इन सभी को उस अनादि एवं अनन्त शक्ति के रूप में स्वीकार करते थे। मनुष्य को गाँधीजी शरीर, मन और आत्मा का योग मानते थे और यह मानते थे कि मनुष्य जीवन का अन्तिम उद्देश्य आत्मज्ञान, ईश्वर प्राप्ति और मोक्ष है। इन्होंने मनुष्य जीवन को दो पक्षों में विभाजित किया- एक भौतिक और दूसरा आध्यात्मिक। इनकी दृष्टि से ये दोनों पक्ष एक-दूसरे पर निर्भर करते हैं और एक के विकास के बिना दूसरे का विकास नहीं किया जा सकता । मनुष्य के इन दोनों पक्षों का विकास एक साथ करना चाहिए।

महात्मा गाँधी का शिक्षा में योगदानः

राष्ट्रपिता महात्मा गाँधी केवल राजनैतिक नेता ही नहीं थे अपितु एक बहुत बड़े धर्म मर्मज्ञ एवं समाज सुधारक भी थे। इन्होंने अपने समय की पुस्तकीय, सैद्धान्तिक, संकुचित और परीक्षा प्रधान शिक्षा में सुधार के लिए भी अनेक सुझाव दिये थे। शिक्षा जगत में ये शिक्षाशास्त्री के रूप में प्रतिष्ठित हुए। गाँधी जी शिक्षा को व्यक्ति का जन्मसिद्ध अधिकार मानते थे और मनुष्य की किसी भी प्रकार की, भौतिक अथवा आध्यात्मिक उन्नति के लिए इसे इतना ही आवश्यक मानते थे जितना बच्चे के शारीरिक विकास के लिए माँ का दूध। यही कारण है कि इन्होंने एक निश्चित आयु तक के बच्चों के लिए सामान्य शिक्षा की व्यवस्था अनिवार्य रूप से करने पर बल दिया और उसे निःशुल्क करने की बात कही। इनका स्पष्ट मत था कि यह शिक्षा विदेशी भाषा अंग्रेजी के माध्यम से नहीं दी जा सकती, यह शिक्षा मातृभाषा के माध्यम से ही दी जा सकती है। ये शिक्षा द्वारा मनुष्य को स्वावलम्बी बनाना चाहते थे, उसे अपनी रोजी-रोटी कमाने योग्य बनाना चाहते थे, इसलिए इन्होंने हस्तकौशलों की शिक्षा पर विशेष बल दिया। सत्य, अहिंसा, ब्रह्मचर्य, अस्वाद, अस्तेय, अपरिग्रह, अभय, अस्पृश्यता निवारण, कायिक श्रम, सर्वधर्म समभाव और विनम्रता पालन की ओर प्रवृत्त करने पर बल दिया। गाँधीजी ने अपने इस शिक्षा दर्शन के आधार पर राष्ट्रीय शिक्षा का स्वरूप निश्चित किया और उसे बेसिक शिक्षा का नाम दिया। युद्ध अथवा हिंसात्मक संघर्ष और सत्याग्रह में अंतर है। हिंसात्मक संघर्ष का उद्देश्य विरोधी को अधिकाधिक क्षति पहुँचाना अथवा उसे नष्ट करना होता है, जबकि सत्याग्रह का उद्देश्य विरोधी द्वारा किए जाने वाले अन्याय तथा अत्याचार का अंत करना ही होता है, स्वयं उसे किसी प्रकार का कष्ट पहुँचाना नहीं। हिंसात्मक संघर्ष करने वाले व्यक्ति के मन में विरोधी के प्रति क्रोध, घृणा, प्रतिरोध आदि दुर्भावनाएँ होती हैं जबकि सत्याग्रही अपने विरोधी के प्रति भी स्नेह और सौहार्द ही रखता है। वह विरोधी के दुष्कर्म से घृणा करता है, विरोधी से नहीं। हिंसात्मक संघर्ष करने वाला व्यक्ति अपने उद्देश्य की पूर्ति के लिए विरोधी को ही कष्ट पहुँचाता है, जबकि सत्याग्रह स्वयं अधिकाधिक कष्ट सहन करके भी विरोधी के हृदय-परिवर्तन द्वारा अपना लक्ष्य प्राप्त करता हैं। हिंसात्मक संघर्ष में प्रत्येक पक्ष अपनी विजय तथा प्रतिपक्ष की पराजय की कामना करता है, किन्तु सत्याग्रही केवल सत्य और न्याय की विजय चाहता है। अपनी विजय और विरोधी की पराजय नहीं। हिंसात्मक संघर्ष के अन्त हो जाने के पश्चात भी दोनों पक्षों में शत्रुता बनी रह जाती है किन्तु सत्याग्रह की समाप्ति के उपरान्त सत्याग्रही अपने सद्व्यवहार द्वारा विरोधी को अपना मित्र बना लेता है। इस प्रकार सत्याग्रह युद्ध, हिंसात्मक संघर्ष से मूलतः भिन्न है।

निष्कर्ष:

सत्याग्रह का सम्पूर्ण दर्शन कुछ मौलिक सिद्धान्तों पर आधारित है। जैसे यह निर्विवाद तथ्य है कि संसार में शोषण, अन्याय, अत्याचार आदि अनेक बुराइयाँ हैं। इन सभी बुराइयों का निराकरण अत्यंत आवश्यक है क्योंकि इन्हें समाप्त किए बिना विश्व में सुख शांति की कल्पना भी नहीं की जा सकती। ये बुराइयाँ युद्ध और अन्य हिंसात्मक उपायों द्वारा कभी समाप्त नहीं हो सकतीं, क्योंकि हिंसा और अधिक तीव्र हिंसा को ही जन्म देती है । विश्व का दीर्घकालीन इतिहास इस बात का साक्षी है कि युद्ध एवं प्रतिशोध से और अधिक घृणा तथा प्रतिशोध का ही जन्म होता है । केवल आत्मपीड़न तथा अन्य अहिंसात्मक उपायों द्वारा ही संसार से अन्याय, शोषण, अत्याचार आदि बुराईयों का अंत किया जा सकता है। इसी कारण, सत्याग्रही के लिए स्वयं संघर्ष कष्ट सहन करने की इच्छा तथा क्षमता का विशेष महत्व है। सत्याग्रह स्वाश्रित है। इसे अपनाने से पूर्व विरोधी की अनुमति आवश्यक नहीं होती। वस्तुत: जब विरोधी प्रतिरोध करता है तो यह बहुत अधिक प्रकाशमान होता है। ''सत्याग्रही अपने विरोधी के सम्मुख अपना आध्यात्मिक व्यक्तित्व स्थापित करता है और उसके हृदय में यह भावना जगा देता है कि अपने व्यक्तित्व को हानि पहुँचाए बिना उसे हानि नहीं पहुँच सके'' इस प्रकार सत्याग्रह 'आत्मानुभूति और संयोग का ही पोषण करता है।

संदर्भ ग्रन्थ सूची:

1. रामनाथ सुमन, सत्याग्रह, इलाहाबाद : गाँधी साहित्य प्रकाशन, 1967, पृष्ठ 3-5
2. के0 एल0 श्रीधरानी, वारविध आउट वायलेंस, बंबई : भारतीय विधा भवन 1962, पृष्ठ 16
3. सम्पूर्ण गाँधी वाड्.मय, दिल्ली : निर्देशक प्रकाशन विभाग द्वारा प्रकाशित, 1962 IX पृष्ठ 25
4. सम्पूर्ण गाँधी वाड्.मय, दिल्ली : निर्देशक प्रकाशन विभाग द्वारा प्रकाशित, 1962 IX पृष्ठ 227
5. रामरतन, गाँधीज कान्सेप्ट ऑफ पोलिटिकल ऑब्लिगेशन, कलकत्ता : मिनर्वा एसोसिएट्स, 1972, पृष्ठ 162
6. प्रभात कुमार भट्टाचार्य, गाँधी दर्शन, जयपुर : कॉलेज बुक डिपो, 1973, पृष्ठ 113
7. वेद प्रकाश वर्मा, महात्मा गाँधी का नैतिक दर्शन, दिल्ली : बी0 एल0 प्रिंटर्स, 1979, पृष्ठ 142-144
8. विश्वनाथ प्रसाद वर्मा, आधुनिक भारतीय राजनीतिक चिंतन, आगरा : लक्ष्मी नारायण अग्रवाल, 1988, पृष्ठ 358-350
9. प्रताप सिंह, गाँधीजी का दर्शन, जयपुर रिसर्च पब्लिकेशंस, 1988, पृष्ठ 44
10. एस. के. अग्रवाल : शिक्षा के तात्विक सिद्वांत पृ0-265.
11. पी. डी. पाठक एवं जी. एस. त्यागी, शिक्षा के दार्शनिक सिद्वांत, पृ0-8.
12. एन. आर. स्वरूप सक्सेना, शिक्षा के दार्शनिक एवं समाज शास्त्रीय सिद्वांत, पृ0-219.
13. बारबरा साउथर्ड फेमिनिज्म ऑफ महात्मा गाँधी', गाँधी मार्ग वॉल्यूम 13 ए नं.71, अक्टूबर 1981, पृ0 403
14. इंडियन ओपिनियन, 16-12-1905 (शिक्षण और संस्कृति) पृ0 115
15. यंग इंडिया, हिन्दी नवजीवन, 8-9-1926 (नवजीवन, 12-9-1926 (शिक्षण और संस्कृति, पृ0 51
16. हिन्द-स्वराज्य, अध्याय 18, शिक्षण, इंडियन ओपिनियन, 18-12-1909 (सम्पूर्ण गांधी वांगम्य, खण्ड 10,
    अप्रैल 1964, संस्करण।
17. हिन्दी, महादेव भाई की डायरी, खण्ड 5, पृ0 53 शिक्षण और संस्कृति, पृ0 484
18. अल्फ्रेड रसेल वालेस (1823-1913) डार्विन का समकालीन प्रसिद्ध प्रकृति तत्त्व